Quest Journals
Journal of Hindi, Political Science and Home Science
Volume 14 ~ Issue 1 (2024) pp: 14-18
ISSN(Online): 2347 – 2305
www.questjournals.org

Research Paper

केन्द्रक एवं संयुक्त परिवार के कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन(सीतामढ़ी के संदर्भ में)

अर्चना कुमारी
शोधार्थी
गृहविज्ञान विभाग
ल.ना.मि.वि.वि.कामेश्वरनगर दरभंगा-बिहार,

सार

यह शोध वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि महिलाओं की कार्य भागीदारी बढ़ रही है। परिवार की संरचनाएँ तेजी से बदल रही हैं। कार्य-जीवन संतुलन एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा बन गया है। इसमें गुणात्मक और वर्णनात्मक दोनों पद्धतियों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्त्रोंत शोध पत्र,सामाजिक अध्ययन, विभिन्न बेवसाइटों से आकड़ों को एकत्र किया गया है। तथा दो उद्देश्यों पर चर्चा की गयी है। निष्कर्ष से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार की महिलाएँ परिवार से अधिक सहायता प्राप्त कर कॅरियर में आगे बढ़ जाती हैं। उन्हे दोहरी भूमिका निभाने में अधिक कठिनाइयों का सामना नही करना पड़ता है जबकि केन्द्रक परिवार की महिलाएँ आत्मनिर्भरता के सहारे संघर्ष करते हुए स्वंय के परिश्रम से आगे बढ़ती हैं। और दोहरी भूमिका निभाने में अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मुख्य बिंदु- *कामकाजी महिलाएँ, केन्द्रक परिवार, संयुक्त परिवार, दोहरी भूमिका ।*

प्रस्तावना

भारतीय समाज निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक संरचनाओं का प्रतिबिंब है। वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार तथा तकनीकी विकास ने न केवल जीवनशैली को बदला है, बल्कि पारिवारिक संरचना और लैंगिक भूमिकाओं को भी प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के दौर में भी आज की कामकाजी महिला एक ओर पारिवारिक दायित्वों को निभा रही है और दूसरी ओर आर्थिक तथा पेशेवर क्षेत्र में अपने कार्यो के द्वारा उल्लेखनीय योगदान दे रही है। महिलाओं की भूमिका पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ चुकी है, किंतु घरेलू और पेशेवर जिम्मेदारियों का द्वंद्व उनके जीवन में दोहरी भूमिका के रूप में चुनौतियों के रुप में सामने खड़ा ही रहता है। भारत में प्रचलित दो प्रमुख पारिवारिक संरचनाएँ है- पहला संयुक्त परिवार और दूसरा केन्द्रक परिवार जो महिलाओं की दोहरी भूमिका की प्रकृति और अनुभव दोनों को भिन्न- भिन्न रूप से प्रभावित करती हैं। मानव जीवन के प्रत्येक अवस्था में परिवार की आवश्यकता होती है। इसलिए नही की परिवार समाज की मूल इकाई है, बल्कि इसलिए कि परिवार के बिना किसी भी व्यक्ति का विकास उसकी प्रगति यहाँ तक की उसका अस्तिव भी अधूरा है, क्योंकि परिवार के बिना इंसान अपनी खुशियों की कल्पना नहीं कर सकता। इसलिए यदि परिवार की तुलना एक छतरी से की जाये तो अतिश्योक्ती नही होगी।क्योंकि जिस प्रकार एक छतरी बारिश के पानी से भीगने से बचाती है ठीक उसी प्रकार परिवार भी प्रत्येक कठिन परिस्थिति में घर के प्रत्येक सदस्य के साथ ज़रूरत के समय कंधा से कंधा मिलाकर खड़ा रहता है। आजकल एक नया चलन है कि हम बहुं और बेटी में अन्तर नही करते हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य चाहता है कि उनके घर की बहुऐं काम करें जिससे उनका भी नाम रोशन हो किंतु जब बहुऐं घर से बाहर जाकर काम करने लग जाती है तब अक्सर जो माँ बेटी के साथ रसोई में घंटों काम करती थी,उसी माँ के घुटनों में दर्द होने लगता है। बहुँ के साथ रसोई में दो मिनट के लिए खड़ा होना कठिन हो जाता है,ये बहुँ-बेटी में अन्तर उत्पन्न करने वाली रुढ़िवादिता नही है तो क्या है। बिडम्बना है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी पारिवारिक सदस्यों के मन, वाणी और विचारों में सदियों पुरानी रुढ़िवादिता उत्पन्न हो ही जाती है।अर्थात् इस बात में तनिक भी संदेह नही है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य चाहता है कि उनके घर की बहुऐं चाँद पर कदम रखें, काम करें अपनी आमदनी को घर के प्रत्येक सदस्य पर खर्च करें किंतु"चाँद पर जाने से पहले पराठा और सब्जी बनाकर ही जायें।" इससे कामकाजी महिलाओं को अपने कार्यस्थल और परिवार के कार्यों के बीच सामन्जस्य स्थापित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

बंदेली और इसरान (2015) के शोध पत्र के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि "कामकाजी महिलाओं को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है चाहे वे संयुक्त परिवार की हो या एकल परिवार से संबंधित हों। परिवार के साथ-साथ बाहर निकलकर काम संभालना किसी भी कामकाजी महिला के लिए उस समय और अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जब उसे अपने काम और परिवार के साथ बच्चों की जिम्मेदारी की भूमिका का भी निर्वहन करना हो।

किंतु अधिकांशत: संयुक्त परिवार प्रणाली कामकाजी महिलाओं को उस समय प्रोत्साहित और समर्थन करते है जब कामकाजी महिलाओं के काम के घंटे पारिवारिक घंटों से टकराते हैं। किन्तु उस अवस्था में इन्हे अपनी अर्जित आय की राशि को परिवार के साथ साझा करना पड़ता है। परन्तु कई बार संयुक्त परिवार प्रणाली खासकर ससुराल में चीजें अलग होती हैं अर्जित आय की राशि साझा करने के बाद भी परिवार के अन्य सदस्य कामकाजी महिलाओं के साथ सहयोग नहीं करते हैं। ऐसे में परिवार में रात दिन किट-पिट शुरु हो जाता है और परिवार का माहौल कलहपूर्ण बन जाता है।"

देसाई (1995) के शोध लेख के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि"संयुक्त परिवार बच्चों के लिए सुरक्षा की पहली पंक्ति उनके अस्तित्व,स्वास्थ्य,शिक्षा,विकासात्मक पालन-पोषण,भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिककरण का एक प्रमुख कारक है साथ ही निरंतरता और परिवर्तन के बीच एक कड़ी भी है। विशेषकर उन महिलाओं के लिए जिनके बच्चे घर पर रहते है या स्कूल जाते है छोटे है और वे स्वंय घर से बाहर निकलकर 5-8 घंटे सरकारी या प्राइवेट सेक्टर में कार्य करती है। इतना ही नही परिवार में समस्याओं के समय स्थिरता और सहारा देने की प्रबल क्षमता होती है।"

केन्द्रक परिवार वह होता है,जिसमें माता-पिता और उनके एक या एक से अधिक बच्चे रहते हैं। इस परिवारिक व्यवस्था के उदय के कारणों में बढ़तें शहरीकरण में रहने की लालसा,जगह की कमी,दृष्टिकोण में परिवर्तन, अत्यधिक स्वतन्त्रता की लालसा,पश्चिमी सभ्यता के रहन-सहन का प्रभाव अन्य आदि। एकल परिवार प्रणाली संयुक्त परिवार की अपेक्षा तेजी से अपनी जड़ें जमातें हुए फल-फूल रही है। आज की तेज रफ्तार की भागम भाग भरी स्वतंत्र दुनिया में एकल परिवार में रहना आदर्श माना जा रहा है।केन्द्रक परिवार में अधिकांशत: घरेलू और सामाजिक क्षेत्र में कामकाजी महिलाओं की अच्छी स्थिति देखने को मिलती है और बेहतर वित्तीय स्थिरता, बच्चों के लिए मजबूत समर्थन एवं सहायता प्रणाली के सम्बन्ध में सभी प्रकार के निर्णय लेने की स्वतंत्रता आदि होती है। सदस्यों और बच्चों की संख्या सीमित होने से सुविधाऐं शीध्र उपलब्ध हो जाती है। किंन्तु एकल परिवार के कुछ नुकसान भी हैं जैसे- कार्य-जीवन संतुलन की समस्याएं, अकेलेपन और अलगाव की भावना, विवादों को सुलझाने में कठिनाई, विधवाओं और वृद्धों के लिए असुरक्षा की भावना, आर्थिक कमी, बच्चों की असुरक्षा, कुछ बच्चों में संस्कारों की कमी आदि।

कामकाजी महिला से तात्पर्य उस महिला से है जो मजदूरी या वेतन के लिए अपने घर से बाहर जाकर काम करती है, एवं आय अर्जित करती है।

रोहिल्ला और मेहता (2020) ने "पारिवारिक जिम्मेदारियों और कार्यस्थल नीतियों के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हिसार में कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों की जांच की। अध्ययन से पता चला कि विवाहित महिलाओं पर अक्सर अपने बच्चों और परिवार की देखभाल करने का अधिक दायित्व होता है, जिसके परिणामस्वरूप कठिन परिस्थितियाँ हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ नियोक्ताओं द्वारा मातृ एवं शिशु देखभाल अवकाश देने से इनकार करने से महिला कर्मचारियों को अपने पद से इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। यह शोध कामकाजी महिलाओं के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहायक कार्यस्थल नीतियों की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।"

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत शोध वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ महिलाओं के कार्य की भागीदारी बढ़ गयी है। यही कारण है कि आज की महिला अपने जीवन में दोहरी भूमिका निभा रही है एक ओर वह घर की देखरेख, बुजुर्गों और बच्चों की देखभाल तो दूसरी ओर नौकरी, आय अर्जन तथा पेशागत दायित्वों का निर्वहन उसके जीवन का अपरिहार्य अंग बन गया है। भारत में पारिवारिक संरचना के दो प्रमुख प्रकार-केन्द्रक परिवार और संयुक्त परिवार जो इन दोहरी भूमिकाओं के स्वरूप और दबाव को प्रभावित करते हैं। इन दोनों प्रकार की पारिवारिक व्यवस्था में रहने वाली कामकाजी महिलाओं के अनुभव, चुनौतियाँ तथा तनाव का स्तर भिन्न–भिन्न हो सकता है। यह अध्ययन भारतीय पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक-आर्थिक भागीदारी कार्यस्थल सुधारों एवं पारिवारिक संवेदनशीलता को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्ययन का उद्देश्य:

1- केन्द्रक एवं संयुक्त परिवार के कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका को समझना।
2- दोहरी भूमिका के कारण केन्द्रक एवं संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाओं के सम्मुख उत्पन्न चुनौतियों एवं अवसरों का विश्लेषण प्रस्तुत करना ।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन सीतामढ़ी जिले के संयुक्त एवं केन्द्रक परिवार की कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें गुणात्मक और वर्णनात्मक दोनों पद्धतियों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्त्रोंत शोध पत्र,सामाजिक अध्ययन, विभिन्न बेवसाइटों से आकड़ों को एकत्र किया गया है। और परिणाम एवं विश्लेषण की चर्चा के लिए तालिका का उपयोग किया गया है।

कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका के विभिन्न आयाम:-

1. गृहिणी की भूमिका

- भोजन बनाना, सफाई, बच्चों की देखरेख
- बुजुर्गों—विशेषकर संयुक्त परिवार में—की आवश्यकताओं का ध्यान
- घरेलू निर्णयों में भूमिका

2. पेशेवर भूमिका

- नौकरी में समयबद्धता
- कार्यस्थल के दायित्व और प्रदर्शन का दबाव
- आर्थिक योगदान

3. व्यक्तिगत जीवन और आत्म-विकास

- स्वास्थ्य प्रबंधन
- भावनात्मक संतुलन
- सामाजिक सहभागिता
- मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक चुनौती

केन्द्रक परिवार के सकारात्मक लाभ:-

- कार्य-निर्णयों में स्वतंत्रता
- समय और संसाधनों पर व्यक्तिगत नियंत्रण
- आधुनिक जीवनशैली अपनाने का अवसर

केन्द्रक परिवार की कामकाजी महिलाओं के सम्मुख आने वाली चुनौतियाँ:-

- घरेलू जिम्मेदारियों का पूर्ण बोझ- केन्द्रक परिवारों में अधिकांश घरों में घरेलू कामों के लिए अतिरिक्त सहायता हर समय उपलब्ध नहीं होती। इससे महिला पर काम की दोहरी मार पड़ती है।
- बच्चों की देखरेख - पालन-पोषण का पूरा भार अक्सर पति-पत्नी पर ही होता है, जिसमें महिला की भूमिका अधिक प्रमुख मानी जाती है।
- समय-प्रबंधन दबाव- घर और नौकरी के बीच तालमेल बैठाने के लिए महिला को समय प्रबंधन की विशेष आवश्यकता होती है।
- भावनात्मक और मानसिक तनाव और अकेलापन- अकेलेपन, सहयोग की कमी, और कार्य में आने वाली समस्याओं में समायोजन करने का प्रयास, आंकाक्षाओं से मानसिक तनाव बढ़ने में सहयोग देता है।
- गृह-व्यवस्थापन की चुनौतियाँ-घरेलू खर्च, बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य आदि की पूरी योजना का प्रबंधन भी महिला पर निर्भर हो जाता है।

संयुक्त परिवार के सकारात्मक लाभ:-

- परिवार के सदस्यों का सहयोग- परिवार के कई सदस्य घरेलू कार्यों में सहयोग कर सकते हैं, जिससे काम का बोझ कम हो जाता है।
- बच्चों के पालन-पोषण में मदद-दादा-दादी, चाचा-चाची के होने से महिला को मानसिक राहत मिलती है।
- मानसिक एवं भावनात्मक सहारा- संयुक्त परिवार सामाजिक-भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है।
- सांस्कृतिक मूल्य एवं परंपरा का संरक्षण- कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों को विविध पारिवारिक मूल्यों से परिचित करवाती है।

संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाओं के सम्मुख आने वाली चुनौतियाँ:-

- रीति-रिवाज एवं परंपरागत अपेक्षाओं का दबाव-संयुक्त परिवार में महिला से घरेलू कार्य अधिक कुशलता से करने की अपेक्षा की जाती है।
- निर्णय लेने में स्वतंत्रता की कमी-परिवार के वरिष्ठ सदस्यों की वजह से व्यक्तिगत निर्णयों में कम स्वतंत्रता मिलती है।
- कार्यस्थल और परिवार की अपेक्षाओं में टकराव -कभी-कभी परिवार की सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना अनिवार्य होता है, जिससे समय प्रबंधन प्रभावित होता है।

- गोपनीयता का अभाव-संयुक्त परिवार में प्राइवेसी सीमित होती है, जिससे मानसिक दबाव बढ़ सकता है।

कार्यस्थल का प्रभाव:-

- कामकाजी महिला चाहे केन्द्रक परिवार की हो या संयुक्त परिवार की हों कार्यस्थल पर निम्नलिखित प्रभावों से गुजरती ही है-
- लैंगिक भेदभाव
- असमान वेतन
- मातृत्व अवकाश का सीमित लाभ
- पदोन्नति में चुनौतियाँ
- कार्यस्थल पर असुरक्षा की भावना

तालिका सं01- केन्द्रक परिवार एवं संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका का एक तुलनात्मक विश्लेषण

विश्लेषण के आयाम	**केन्द्रक परिवार**	**संयुक्त परिवार**
घरेलू कार्य का भार	अत्यधिक	साझा एवं अपेक्षाकृत कम
निर्णय की स्वतन्त्रता	अधिक	कम
सामाजिक अपेक्षाएँ	कम	अधिक
बच्चों की देखरेख	स्वंय पर निर्भर	दादा-दादी परिवार सहयोगी
मानसिक तनाव	उच्च	मध्यम
निजी समय	सीमित	पर्याप्त
कॅरियर विकास	स्वंय प्रयास आधारित	सहयोगी परन्तु परंपरा पर निर्भर
पारिवारिक समर्थन	कम	अधिक
भावनात्मक सुरक्षा	मध्यम	उच्च
स्वतन्त्रता बनाम बंधन	स्वतन्त्रता अधिक	कम स्वतन्त्रता एवं सांस्कृतिक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि केंद्रक परिवार की कामकाजी महिला पर घरेलू कार्य का भार अत्यधिक होता है मानसिक तनाव का स्तर भी उच्च होता है, घर और बाहर के कार्य का बोझ अधिक होता है जिससे उनके पास स्वंय के लिए समय निकालना कठिन होता है। या कम होता है कॅरियर विकास स्वंय के प्रयास पर निर्भर होता है। पारिवारिक समर्थन की कमी होती है। परिवार के सदस्यों के साथ नही होने से भावनात्मक सुरक्षा मध्यम होता है। परन्तु प्रत्येक कार्य के लिए स्वतन्त्रता होती है। जबकि संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाओं पर घरेलू कार्य का भार साझा एवं अपेक्षाकृत कम होता। किंतु निर्णय लेने की स्वतन्त्रता की दृष्टि से देखा जाय तो केंद्रक परिवार की कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाओं को कम आजादी होती है, साथ ही केंद्रक परिवार की कामकाजी महिलाओं सामाजिक अपेक्षाएँ कम और संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक अपेक्षाएँ अधिक होती है,केंद्रक परिवार की कामकाजी महिलाओं को अपने बच्चों की देखरेख भी स्वयं ही करनी पड़ती है जबकि संयुक्त परिवार में बच्चों की देखरेख दादा-दादी तथा परिवार के अन्य सदस्य भी कर लेते है इनके मानसिक तनाव का स्तर मध्यम होता है निजी कार्य के लिए समय की अधिकता होती है,कारण कि उसका सहयोग करने के लिए परिवार के अन्य सदस्य होते है, किंतु परंपरागत अपेक्षाओं के कारण संयुक्त परिवार की महिलाओं का कॅरियर विकास का निर्णय और कार्य परिवार के सहयोग पर निर्भर होता है। भावनात्मक सुरक्षा अधिक होती है। स्वतन्त्रता बनाम बंधन सामाजिक एवं सांस्कृतिक रिति-रिवाज के कारण स्वतन्त्रता की कमी होती है।

सुझाव

- पारिवारिक स्तर पर उत्तदायित्वों को निभाने के लिए लैंगिक संतुलन बढ़ाया जाएं।
- कार्यस्थल पर महिला–अनुकूल सुरक्षित रणनीतियों को कठोरता पूर्वक अपनाया जाएं।
- संयुक्त परिवारों में महिलाओं की निर्णय लेने की स्वतंत्रता को सम्मान दिया जाएं।
- केन्द्रक परिवारों में घरेलू सहयोग और सामुदायिक सहायता को बढ़ावा दिया जाएं।

- महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के लिए काउंसलिंग एवं वेलनेस कार्यक्रम उपलब्ध कराए जाएं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में कामकाजी महिलाएँ जीवन के दो प्रमुख दायित्व घर और नौकरी को समान रूप से संभाल रही हैं। किंतु केन्द्रक परिवार की कामकाजी महिलाएँ अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होते हुए भी घरेलू जिम्मेदारियों के भारी बोझ से प्रतिदिन गुजरती हैं। जबकि वहीं संयुक्त परिवार की कामकाजी महिलाएँ सहयोग और सुरक्षा का लाभ प्राप्त कर लेती है, किंतु परंपरागत अपेक्षाओं से उत्पन्न प्रतिबंधों का सामना भी करती हैं।अत: केन्द्रक और संयुक्त दोनों परिवार की संरचनाओं में कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका सदैव से चुनौतीपूर्ण और जिम्मेदारियों से भरी हुई है।अतः समाज,परिवार और कार्यस्थल के लोगों को मिलकर ऐसी परिस्थितियाँ तैयार करनी चाहिए, जिसमें महिलाएँ अपने दोनों दायित्वों को संतुलित रूप से निभाते हुए सुरक्षित महसुस करें और मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें।

संदर्भ सुची

[1]. Bandeali, M. S. M., & Isran, M. A. (2015). The changing patterns in family system from extended to nuclear: in context of working women in Pakistan. Asia Pacific-Annual Research Journal of Far East & South East Asia, 33.

[2]. Nigatu, D., et al (2014). Factors associated with women's autonomy regarding maternal and child health care utilization in Bale Zone: a community based cross-sectional study. BMC Women's Health. 14, (79)..

[3]. Omariba, D. (2003). Women's Educational Attainment and Inter generational Patterns of Fertility Behaviour in Kenya. PSC Discussion Papers Series, 17, 11, Article 1.

[4]. Patil, A. & Nikhade, D. (1999). Stress level of working and nonworking women. The International journal of Indian psychology, 3 (4), 31 - 37.

[5]. Sethi, R.M. (1998). Status and power of working women within the family. A test of Marxisan perspective. Journal of Sociological Studies, Vol:8

[6]. Singh, P.& Gupta, S. (2013). A Conceptual Study on Women Empowerment-Facts and Realities. IOSR Journal of Humanities and Social Science, 11 (4), 54-63

[7]. Ullah, Z., Kakar, K. Z., & Khilji, A. B.(2011). Effect of Female Education on Family Size in Pakistan: A Case Study of Quetta City. Journal of International Academic Research, 11 (2).